हिन्दी साप्ताहिक

RNI No. UPHIN/2011/43668

जनवीणा

WWW.JANVEENA.COM

स्वर जन-मन का...

वर्ष : 12 | अंक : 18 | लखनऊ, 14 अप्रैल, 2023 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 3 रूपये

अतीक का बेटा असद झांसी में एनकाउंटर में ढेर, शूटर गुलाम भी मारा गया

झांसी। माफिया अतीक अहमद के बेटा असद और गुलाम को झांसी में यूपी एसटीएफ की टीम ने मुठभेड़ में मार गिराया है। दोनों पर पांच-पांच लाख रुपये का इनाम था। उमेश पाल को 24 फरवरी 2023 को उनके घर में घुसकर गोलियों से भून दिया गया था। तब से आरोपी फरार थे।

उमेश पाल हत्याकांड में यूपी एसटीएफ ने बड़ी कार्रवाई की है। माफिया अतीक अहमद के बेटे असद और शूटर गुलाम अहमद का एनकाउंटर किया गया है। यूपी एसटीएफ ने यह कार्रवाई झांसी में की है।

उमेश पाल हत्याकांड में पांच लाख के इनामी असद और शूटर गुलाम का एनकाउंटर कर दिया गया है। प्रयागराज एसटीएफ की टीम ने दोनों को झांसी में मार गिराया। उमेश पाल की हत्या के बाद से पांचों शूटर फरार थे। इनमें से असद और गुलाम को आज एसटीएफ ने मार गिराया। जबकि पुलिस ने घटना के चार दिन बाद एनकाउंटर में अरबाज को मार गिराया। छह मार्च को उस्मान उर्फ विजय को एनकाउंटर में ढेर कर दिया गया था।

उमेश पाल को 24 फरवरी 2023 को उनके घर में घुसकर गोलियों से भून दिया गया था। अतीक अहमद का बेटा असद समेत छह शूटर गोली और बम मारते हुए सीसीटीवी में दिखे थे। अगले दिन उमेश की पत्नी ने अतीक, अशरफ, शाइस्ता, अतीक के बेटे, गुड्डू मुस्लिम, उस्मान समेत अतीक के कई अज्ञात गुर्गों और सहयोगियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

पुलिस ने उस्मान उर्फ विजय चौधरी को पहले ही एनकाउंटर में ढेर कर दिया था। असद, गुलाम, गुड्डू मुस्लिम, साबिर और अरमान पर पांच-पांच लाख का इनाम घोषित किया गया था। एसटीएफ के अधिकारियों के मुताबिक, बृहस्पतिवार दोपहर झांसी में असद और गुलाम के होने की सूचना पर टीम ने घेराबंदी की। दोनों ने फायरिंग की। जवाबी फायरिंग में दोनों ढेर हो गए। उनके पास से विदेशी पिस्टल मिली है। असद अहमद पर एक मुकदम था और पांच लाख का इनाम था। गुलाम पर छह मुकदमे थे और पांच लाख का इनाम था।

अतीक अहमद के तीसरे नंबर का बेटा था असद

झांसी में पुलिस एनकाउंटर में मारा गया असद अहमद के तीसरे नंबर का बेटा था। बड़ा बेटा उमर लखनऊ जेल में बंद है। दूसरे नंबर का अली नैनी जेल में है। चौथे और पांचवे नंबर के नाबालिग बेटे बाल सुधार गृह राजरूपपुर में हैं।

असद ने ब्रिटिश बुलडॉग रिवाल्वर से झोंका था पुलिस टीम पर फायर: एसटीएफ ने असद के पास से अत्याधुनिक ब्रिटिश बुलडॉग रिवाल्वर बरामद की है। यह अत्याधुनिक विदेशी पिस्टल है। एक राउंड में 12 फायर इस पिस्टल से किए जा सकते हैं। असद ने इसी पिस्टल से एसटीएफ पर ताबड़तोड़ फायरिंग की। जिसके जवाबी कार्रवाई में असद मारा गया। वहीं, उसके साथी गुलाम के पास वाल्थर पी 88 पिस्टल थी।

यह भी अत्याधुनिक स्वचालित विदेशी पिस्टल है मकसूद ने भी 12 राउंड फायर किए थे। एसटीएफ टीम में 2 कमांडो भी मौजूद थे। उनके पास स्वचालित हथियार थे। कमांडो ने भी जवाबी फायरिंग की जिसमें असद और गुलाम ढेर हो गए। दोनों के शव पुलिस ने कब्जे में लेकर उसे मेडिकल कॉलेज भिजवाया है। मुठभेड़ की सूचना मिलते ही एसएसपी राजेश एस समेत अन्य मौके पर पहुंच गए।

हत्यारों को सजा मिलना तय था- केशव प्रसाद मौर्य

उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केपी मौर्य ने पूर्व सांसद अतीक अहमद के बेटे असद और सहयोगी के पुलिस मुठभेड़ में मारे जाने के बाद यूपी एसटीएफ को बधाई दी है। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि हत्यारों को सजा मिलना तय था। उन्होंने कहा कि अपराधियों के साथ अपराधी जैसा व्यहवार होना चाहिए।

आज दिल को सुकून मिला है- जया पाल: उमेश पाल की पत्नी जया ने कहा कि इंसाफ की शुरुआत हो गई है। जो हुआ अच्छा हुआ। उन्होंने कहा कि आज दिल को सुकून मिला है। अतीक का भी हो एनकाउंटर तब होगा असली न्याय मिलेगा।

असद का एनकाउंटर: सीएम योगी ने की अफसरों की तारीफ

लखनऊ। अतीक अहमद के बेटे असद का एनकाउंटर करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अफसरों के साथ बैठक की और कानून व्यवस्था का जायजा लिया।

उमेश पाल हत्याकांड में फरार चल रहा माफिया अतीक अहमद का बेटा असद अहमद और शूटर गुलाम के एनकाउंटर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने अधिकारियों की तारीफ की और वरिष्ठ अफसरों के साथ बैठक की।

मुख्यमंत्री योगी ने यूपीएसटीएफ के साथ, यूपी डीजीपी, स्पेशल डीजी और पूरी पुलिस टीम की सराहना की। प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद ने इस

एनकाउंटर की जानकारी मुख्यमंत्री योगी को दी। इस पूरे मामले की रिपोर्ट मुख्यमंत्री योगी को सौंप दी गई है। इस पर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बयान दिया है।

उन्होंने कहा कि हम कानून व्यवस्था के मुद्दे पर बिल्कुल भी समझौता नहीं करेंगे। एक-एक माफिया को मिट्टी में मिलाकर ही दम लेंगे।

उन्होंने कहा कि एक अपराधी का ऐसा अंजाम बताता है कि माता-पिता को ध्यान रखना चाहिए कि वो बच्चों को अपराधी नहीं बनाएंगे और उन्होंने अपराधी नहीं बनाया होता तो अतीक के बेटे का भी ऐसा अंजाम नहीं होता।

केशव ने ट्वीट कर भी कहा कि यूपीएसटीएफ को बधाई देता हूं। उमेश पाल एडवोकेट और पुलिस के जवानों के हत्यारों का यही हश्र होना था। प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि किसी भी माफिया को बख्शा नहीं जाएगा। उसे कठोर से कठोर सजा मिलेगी। योगी सरकार जनता को सुरक्षित शासन देने के लिए प्रतिबद्ध है। अतीक अहमद का पुत्र असद उमेश पाल हत्याकांड में फरार चल रहा था और पांच लाख रुपये का इनामी था। असद अपने साथी मकसूद के साथ एसटीएफ की मुठभेड़ के दौरान ढेर हो गया। बृहस्पतिवार दोपहर एसटीएफ के डिप्टी एसपी नरेंद्र कुमार एवं डीएसपी विमल कुमार की अगुवाई में एसटीएफ को असद के झांसी से होकर गुजरने की सूचना मिली थी।

एसटीएफ टीम ने उसे परीक्षा पावर के पास घेर लिया। एसटीएफ के घेरते ही असद ने अपनी विदेशी राइफल से गोली चलाई। एसटीएफ ने भी जवाब में फायर किए। एसटीएफ की गोली लगने से असद मौके पर ही मारा गया।

सम्पादकीय

आप की धाक

महज एक दशक पहले बनी आम आदमी पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिलना निस्संदेह चमत्कारिक सफलता ही कहा जायेगा। वह भी उसी समय जबकि कई दिग्गज नेताओं की पार्टियों मसलन नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी, तृणमूल कांग्रेस तथा कम्युनिस्ट पार्टी ऑफइंडिया का राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा खत्म हो गया है। आप की यह सफलता केंद्रीय चुनाव आयोग के संवैधानिक प्रावधान के अनुरूप ही संभव हुई है। दरअसल, चुनाव आयोग के नियम 1968 के अनुसार, किसी राजनीतिक पार्टी का चार राज्यों में लोकसभा या विधानसभा का चुनाव लड़ना, इन चुनावों में कम से कम छह प्रतिशत वोट हासिल करना, किसी राज्य या राज्यों से चार सांसद चुने जाने अथवा लोकसभा में दो प्रतिशत सीट हासिल करने पर अथवा चार राज्यों में क्षेत्रीय पार्टी होने का रुतबा हासिल होने पर राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिल जाता है। इसके चलते आप को अब एक चुनाव चिन्ह पर पूरे देश में चुनाव लड़ने का अवसर मिल सकेगा। दरअसल, आम आदमी पार्टी ने चार राज्यों में छह प्रतिशत से ज्यादा वोट हासिल कर लिये थे। आप ने दिल्ली व पंजाब में जहां सरकार बनायी, वहीं गुजरात में तेरह प्रतिशत व गोवा में छह प्रतिशत से अधिक वोट हासिल कर लिये थे। जाहिर बात है कि राष्ट्रीय दल का दर्जा मिलने से आप के खेमें में खुशी की बयार है। अरविंद केजरीवाल महज दस साल में हासिल पार्टी की कामयाबी को चमत्कार की संज्ञा दे रहे हैं। वह भी ऐसे समय में जब तीन महत्वपूर्ण पार्टियों से यह दर्जा छिन गया है। आप के लिये यह सुखद इसलिए भी कि अगले साल देश में आम चुनाव होने जा रहे हैं, जिसके चलते वह राष्ट्रीय राजनीति में अपनी दावेदारी पेश कर सकती है। इस वर्ष भी कुछ महत्वपूर्ण राज्यों में भी विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में पार्टी जनता के बीच जाकर खुद को राष्ट्रीय राजनीति के विकल्प के रूप में पेश करेगी बहरहाल, बहुत संभव है केजरीवाल को आने वाले समय में बड़े विपक्षी नेता के रूप में भूमिका निभाने का मौका मिले। लेकिन एक बात तो तय है कि राष्ट्रीय राजनीति में केजरीवाल का कद हर हाल में बढ़ेगा। निस्संदेह, राष्ट्रीय दल का दर्जा हासिल करने के बाद आप के लिये राजनीतिक परिदृश्य में बहुत कुछ बदलने वाला है। पार्टी आसन्न विधानसभा व आम चुनाव में ज्यादा मजबूत स्थिति में चुनाव लड़ सकती है। पार्टी को जहां पब्लिक ब्रॉडकास्टर यानी दूरदर्शन आदि के जरिये चुनाव प्रचार का मौका मिलेगा, वहीं उसके स्टार प्रचारकों की संख्या व उनके खर्च करने की सीमा बढ़ेगी। पार्टी को चुनाव खर्च आदि में टैक्स आदि में छूट मिलेगी। वहीं नियमानुसार उसकी चुनावी चंदा लेने की क्षमता में भी वृद्धि राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल करने के बाद होगी। दिल्ली में पार्टी का राष्ट्रीय कार्यालय खोलने के लिये जमीन उपलब्ध करायी जायेगी। निस्संदेह, देश में इस वक्त छह राष्ट्रीय दलों में शामिल होना आप की बड़ी उपलब्धि ही कही जायेगी। जिसके चलते पार्टी कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह है। सोमवार को पार्टी को राष्ट्रीय दर्जा मिलने पर अरविंद केजरीवाल ने खुशी जतायी तथा पार्टी के दो मजबूत स्तंभों व पूर्व मंत्रियों मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन की कमी महसूस होने का जिक्र भी किया। बहरहाल, मौजूदा स्थिति में आम आदमी पार्टी का राजनीतिक कद निश्चित रूप से बढ़ेगा। विपक्ष के घटक के रूप में आंदोलनों के दौरान आप को ज्यादा तवज्जो मिलेगी। लेकिन इसके साथ ही पार्टी की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है कि वह एक विश्वसनीय व जवाबदेह विपक्ष के दायित्वों को निभाते हुए लोकतांत्रिक परंपराओं को समृद्ध करे। वह भी ऐसे समय में जब कांग्रेस समेत कई विपक्षी दल देश में लोकतांत्रिक संस्थाओं की शक्तियों का क्षरण करने का आरोप केंद्र सरकार पर लगाते रहे हैं। जनता के प्रतिनिधि के तौर पर एक मजबूत विपक्ष का होना लोकतंत्र की खूबसूरती ही कही जायेगी। विश्वास किया जाना चाहिए कि शिक्षा, स्वास्थ्य व जनभागीदारी के लिये आम आदमी पार्टी ने जो रचनात्मक पहल दिल्ली में की है, वैसा लाभ शेष देश को भी मिलेगा।

बेखौफ होने का इंतजार

विजय

कोई आपकी नीतियों की आलोचना करे, तो इसका बिल्कुल भी ये मतलब नहीं होता कि वो एंटी नेशनल है, अभिव्यक्ति की आजादी और लोकतंत्र में आलोचना के अधिकार को लेकर ये महत्वपूर्ण टिप्पणी हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने की थी। लेकिन ऐसा लगता है कि महाराष्ट्र सरकार तक इस टिप्पणी से निकला संदेश पहुंचा नहीं है या फिर सरकार ने इसे अनसुना कर दिया है। क्योंकि महाराष्ट्र की शिंदे गुट वाली शिवसेना और भाजपा की गठबंधन सरकार ने दो युवा गायकों पर उनके गीतों के कारण मामला दर्ज किया है। ये दोनों युवक अलग-अलग पृष्ठभूमि के हैं, दोनों ने गीत भी अलग-अलग समस्याओं को लेकर अलग ढंग से लिखे। लेकिन दोनों के गीतों को सोशल मीडिया पर खूब देखा और सराहा गया। इसका सीधा मतलब यही है कि जनता भी उनके गीतों और गीतों में व्यक्त भावनाओं से इत्तेफाक रखती है। लेकिन महाराष्ट्र सरकार को ये गीत नागवार गुजरे और इसलिए अब इन युवा कलाकारों पर कानून का डंडा चलाया गया है। औरंगाबाद के रैपर राज मुंगासे का मराठी भाषा में रैप गीत आया, जिसका शीर्षक है चोर और इसके शुरुआती बोल हैं चोर आले 50 खोखे घेऊं किती बाघा, चोर आले एकदम ओके हूं, जिसका हिंदी अनुवाद है कि देखो, चोर 50 करोड़ रुपये के साथ आ गए हैं। देखो, चोर बिल्कुल ठीक दिखते हैं। इस गीत में श्री मुंगासे ने किसी राजनैतिक दल, किसी नेता का नाम नहीं लिया, लेकिन एकनाथ शिंदे सरकार ने इसे आपत्तिजनक पाया। गौरतलब है कि एकनाथ शिंदे और उनके साथ गए विधायकों पर दल बदलने और उद्धव ठाकरे सरकार को गिराने के एवज में मोटी रिश्वत लेने के आरोप लगे थे। इस राजनीतिक तख्तापलट के बाद श्री शिंदे मुख्यमंत्री बने थे। राज मुंगासे के गीत को शिंदे सरकार ने अपने ऊपर ले लिया और शिंदे गुट के एक कार्यकर्ता ने राज मुंगासे पर प्राथमिकी दर्ज कराई। राज मुंगासे पर धारा 501 (मानहानि), 504 (शांति भंग करने के लिए जानबूझकर अपमान) और 505 (2) (वर्गों के बीच दुश्मनी पैदा करने वाले बयान) के तहत मामला दर्ज किया गया है। गौरतलब है कि राज मुंगासे दलित समुदाय से आते हैं, अम्बेडकरवादी आंदोलनों में वे भाग लेते रहे हैं और हाल ही में उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया है। महाराष्ट्र सरकार के निशाने पर आने वाले दूसरे रैपर हैं उमेश खाडे, जो खाडे शंभो के नाम से मशहूर हैं। उनके गीत जनता भोंगली केली यानी आपने जनता को नंगा कर दिया, में भी किसी राजनैतिक दल का जिक्र नहीं है, बल्कि गीत में इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि कैसे गरीब और हाशिये पर पड़े लोगों को जीवनयापन के लिए उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है, जबकि राजनीतिक दल बड़ी-बड़ी सौदेबाजी में व्यस्त हैं। इस गीत पर मुंबई पुलिस की क्राइम इंटेलिजेंस यूनिट ने शिकायत दर्ज की। उन पर आईपीसी की धारा 504, 505 (2) और आईटी अधिनियम 2000 की धारा 67 (इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में अश्लील सामग्री प्रकाशित या प्रसारित करना) के तहत मामला दर्ज किया गया। हालांकि उन्हें पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया। वैसे महाराष्ट्र में भोंगली एक आम ग्रामीण शब्द है, जिसका इस्तेमाल नग्नता के संदर्भ में किया जाता है और खाडे शंभो ने राज्य पर अपने नागरिकों की परवाह नहीं करने के लिए तीखे लहजे में इस शब्द का इस्तेमाल किया। उन्होंने विपक्ष के नेताओं पर भी अपने गीत में निशाना साधा है। दो रैपरों को उनके मन के गीत लिखने और सुनाने पर कानूनी कार्रवाई का सामना महाराष्ट्र में करना पड़ा है। हालांकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, सत्ता के कोपभाजन पहले भी बहुत से लोग केवल इसलिए बने हैं, क्योंकि उन्होंने सत्ता की आलोचना करने या नेता का मखौल उड़ाने की हिम्मत दिखाई। प.बंगाल में जादवपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अंबिकेश महापात्रा को 11 साल पहले ऐसी ही कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ा था, क्योंकि उन्होंने ममता बनर्जी पर बने एक कार्टून को आगे बढ़ाया था। अंबिकेश महापात्रा को 2012 को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन उन्हें बाद में जमानत मिल गई और अभी इस साल जनवरी में वे पूरी तरह दोषमुक्त करार दिए गए। प्रो. महापात्रा ने आरोप मुक्त होने पर कहा था कि कानूनी लड़ाई के अंत के बाद उन्हें अच्छा लगा, लेकिन वे उस दिन का इंतजार करेंगे जब लोग ऐसे झूठे मामलों के खिलाफ उठेंगे और इस युग से झूठे मामलों का अंत होगा। प्रो.महापात्रा ही नहीं, देश के तमाम नागरिकों को ऐसे दिन का इंतजार है, जब वे बेखौफ अपने देश में रह सकें और गलत को गलत, सही को सही कहने की आजादी महसूस कर सकें। सत्ता पर बैठे लोगों पर कोई कार्टून बना दे, तंज कस दे या उनकी कमियों की ओर इशारा कर दे, उन्हें उनके कर्तव्यों की याद दिला दे, ये बता दे कि सत्ता पर वे सुख भोगने के लिए जनता की सेवा के लिए बैठे हैं, तो इन सबसे माननीयों की भावनाओं को ठेस पहुंच जाती है। लेकिन कुछ लोग जो सरेआम देश के संविधान को धता बताकर वैमनस्य फैलाने का काम करते रहते हैं, उन पर कानूनी कार्रवाई नहीं होती। बल्कि कई बार तो सत्ता उन्हें संरक्षण देती है, जिससे विभाजनकारी ताकतों की हिम्मत और बढ़ जाती है। जैसे इस रविवार को ही पूर्वोत्तर दिल्ली के करावल नगर में आयोजित एक शिंदू राष्ट्र पंचायतश् में यूनाइटेड हिंदू फ्रंट के सदस्यों ने हिंदू राष्ट्र बनाने और लव जिहाद को लेकर कार्रवाई करने का आह्वान किया। भाजपा नेता और यूनाइटेड हिंदू फ्रंट के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष जय भगवान गोयल ने कहा, 2025 में आरएसएस के 100 साल पूरे होने से पहले उसका लक्ष्य देश को हिंदू राष्ट्र बनाने का सपना पूरा करना है। हम सबसे पहले उत्तर-पूर्वी दिल्ली को एक हिंदू राष्ट्र जिला बनाएंगे और फिर पूरे देश को हिंदू राष्ट्र बनाएंगे। इस कार्यक्रम में कई भाजपा नेता भी शामिल थे। कार्यक्रम में नफरती भाषण दिए गए, लेकिन उस पर पुलिस क्या कार्रवाई कर रही है, अभी कुछ पता नहीं। अलबत्ता पुलिस ने आयोजकों के खिलाफ आईपीसी की धारा 188 के तहत मामला दर्ज किया कि कार्यक्रम के लिए पुलिस से अनुमति नहीं ली थी। सरेआम देश को हिंदू राष्ट्र बनाने का ऐलान करना देश के लिए खतरनाक है या फिर गरीबी के लिए आवाज उठाना और राजनैतिक बेईमानी पर तंज कसना घातक है।

खालसा पंथ और गीतोपदेश

वैशाखी का पावन पर्व आ गया।सामान्यतया सभी का किंतु विशेष रूप से सिख भाइयों का।इसका सम्बन्ध कृषि,धर्म और कर्म सबसे है।इसी दिन वर्ष 1699 में सिखों के दसवें और अंतिम गुरु गोविंदसिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।खेती की फसल भी इस समय तैयार हो चुकी होती है,अतःकृषि प्रधान देश में हृदयों में आह्लाद होना स्वाभाविक है। सौर मण्डल के राजा सूर्य देव मेष राशि पर आकर परम बलवान हो चुके होते है,क्योंकि यह उनकी उच्च राशि है तथा जगत के प्राणियों के जीवनाधार सूर्य ही हैं।तत्समय मुगलों के अत्याचार से भारत भूमि में त्राहि त्राहि मची थी।गुरु ने इसके विरुद्ध संगठन खड़ा करने का निश्चय किया।देश के कोने कोने से लोग आनन्दपुर साहिब में बुलाये गये।अस्सी हजार की भीड़ एकत्र हुई।गुरु ने अपने ओजस्वी आह्वान में मातृभूमि रक्षार्थ शिर माँगे।बारी बारी से लाहौर के दयाराम,दिल्ली के धरमदास,जगन्नाथपुरी के हिम्मतराय, बीदर के साहबचन्द और द्वारकापुरी के मोहकमचंद उठे और गुरु आज्ञानुसार व्रत पालन का वचन दिया।इन पञ्च प्यारों को गुरु ने अमृत छकाया और उनके हाथ से खुद भी छका।पाँच ककारों यानी केश, कच्छ, कृपाण, कंघा और कड़ा से प्रतिबद्धता रक्खी गई तथा नाम में सिंह लगाया जाना अनिवार्य घोषित हुवा। वाहेगुरू का धार्मिक नारा भी अंगीकार किया गया। इस पंथ को खालसा नाम दिया गया,जो अत्याचारों के विरुद्ध चट्टान की तरह खड़ा हो गया। खालसा का शाब्दिक अर्थ है शुद्ध।

इसमें सभी धर्मों के लोग मिलाकर एक किये गये,जैसे श्रीमद्भगवद्गीता मे कहा गया है कि विद्या और विनय से सम्पन्न ब्राह्मण,गाय,हाथी,कुत्ता और चाण्डाल सब में विद्वज्जन समान दृष्टि रखते हैं। यही नहीं गीता में समोऽह? सर्व भूतेषु तथा ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति का भी उद्घोष हुवा है।गुरु गोविंदसिंह ने अत्याचारों के विरुद्ध तलवार उठाने का आह्वान किया है; ठीक वेसे ही जैसे गीता में कर्म से विमुख हो चुके अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने शस्त्र उठाने हेतु प्रेरित किया है।उन्होंने हर समय भगवद् स्मरण करते हुए युद्ध करने की व्यवस्था दी है,तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्धय च। गीता का कर्मयोग विश्व प्रसिद्ध दर्शन है। कर्म, अकर्म और विकर्म तीन श्रेणियाँ उल्लिखित है।निर्लिप्त शुभ कर्म करना प्रतिपादित किया गया है।उसी तरह गुरु गोविदसिंह अपने चण्डी चरित्र में शुभ कर्मों से कभी न विचलित होने और सदुद्देश्य व अधिकार हेतु युद्ध में जूझने की बात कहते हैं:--

देहि सिवा वर मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूँ न टरौं।
न डरौं अरि सों तब जाय लरौं,निसचै करि आपुनि जीति करौं।।

एक मान्यतानुसार गुरु गोविंदसिंह विष्णु के अंशावतार भगवान श्रीराम के वंशज थे। राम का राज्य तो बहुत विस्तृत था, किंतु लगता है उनके पुत्रों

रघोत्तम शुक्ल

-लव तथा कुश-ने पञ्जाब भूभाग पर विशेष ध्यान दिया और तत्क्रम में लाहौर और कुसूर नाम के नगर (वर्तमान पाकिस्तान) क्रमशः लव और कुश द्वारा बसाये गये थे।

मशहूर बनारस

(कविता)

मशहूर बनारस शिव-नगरी,
मशहूर बनारस का है पान।
मशहूर कचौड़ी गली यहाँ,
मशहूर यहाँ के हैं पकवान।
मशहूर मलाई-पूड़ी है,
मशहूर यहाँ गंगा-स्नान।
मशहूर यहाँ विश्वनाथ गली,
मशहूर है लस्सी-पहलवान।

मशहूर बाज़ार ठठेरी है,
मशहूर बहुत भौकाल-चाट।
मशहूर अस्सी और हरिश्चन्द्र,
मशहूर मणिकर्णिका घाट।
मशहूर दाल की मंडी है,
मशहूर चौक,अर्बन का हाट।
मशहूर है दुर्गा कुण्ड यहाँ,
मशहूर काशी-कोतवाल ठाट।

मशहूर बनारस की साड़ी,
मशहूर बी.एच.यू.का है ज्ञान।
मशहूर हैं विद्या के आलय,
मशहूर सम्पूर्णानंद पहचान।
मशहूर तुलसी मानस टेम्पल,
मशहूर संकट मोचन हनुमान।
मशहूर किला है रामनगर,
मशहूर चौंसठ योगिनी शान।

मशहूर यहाँ साक्षी गणेश,
मशहूर केदारेश्वर जी नाथ।
मशहूर वीशालाक्षी मंदिर,
मशहूर अन्नपूर्णा का हाथ।
मशहूर कुण्ड लोलार्क यहाँ,
मशहूर लोलार्केश्वर हैं साथ।
मशहूर भारत माता मंदिर,
मशहूर निकट है सारनाथ।

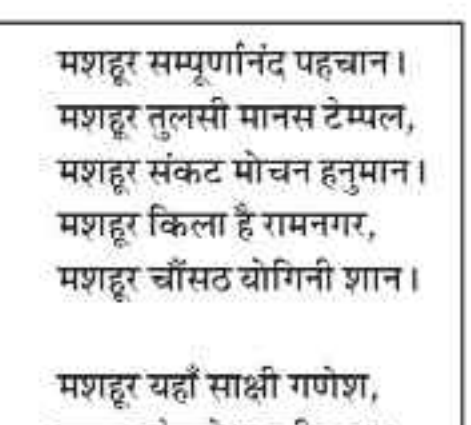

देवेश द्विवेदी देवेश

विकास के पैमानों के अलग-अलग सोपान ग्रीन इंडिया या डिजिटल इंडिया

संजीव ठाकुर

भारत के उदारवादी दृष्टिकोण और निजीकरण के युग में विकास की अवधारणा के बारे में जब भी चर्चा होती है तब स्वाभाविक तौर पर विकास के विभिन्न आयामों पर भी विस्तृत परिचर्चा का पदार्पण होता है। विकास प्राप्ति है या साधन है और विकास की संपूर्ण अवधारणा क्या है इस पर एक स्वस्थ बहस की आवश्यकता है।सं निसंदेह विकास परिवर्तन की सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक बदली हुई परिणति ही है, परिवर्तन अथवा विकास के सामने समतामूलक न्याय पूर्ण तथा संपूर्ण समावेशी प्रयासों को मजबूत करने की बात कही गई है और भारत सरकार ने इस पर अपनी आस्था व्यक्त की है , इसी विचार के साथ भारत ने पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को मजबूती देने का प्रयास किया है भारत को हरित भारत के लक्ष्य को स्वीकार भी किया है। विभिन्न जीव जंतुओं को बचाना तथा वन के परीक्षेत्र को 33: लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में हर संभव प्रयास किए जाने के लिए योजनाएं बनाई जा रही है।वही दूसरी तरफमरुस्थल बनने से धरा को रोकने के प्रयास और जैव विविधता को सुरक्षित रखने का लक्ष्य की भारत में प्रगति कर रहा है।स जलवायु परिवर्तन से भारत को जितना नुकसान हो रहा है इतना किसी भी अन्य देश को नहीं हो रहा है। इसी कार्यक्रम में प्राकृतिक संसाधनों के वितरण प्रकार और गुणवत्ता को जलवायु परिवर्तन से बचाने का प्रयास भी शामिल है ।भारत में इसी संदर्भ में ग्रीन इंडिया जैसी अवधारणा को आत्मसात किया है।ग्रीन इंडिया तथा परिस्थितिकी सुधार को संरक्षण दिया है।उसमें केंद्र व राज्य सरकारों ने मिलकर एक दशक के लिए लगभग 40, हजार करोड़ रुपए के खर्च होने का अनुमान भी दर्शाया है। सरल शब्दों में ग्रीन इंडिया मिशन को जलवायु परिवर्तन की अनुकूलता को अंदर से देखा जाए उसमें कारबन में कटौती तथा परिस्थिति तंत्रों में मजबूती लाने का प्रयास किया जाएगा ,इसके अंतर्गत बंजर वाली भूमि पर 50 लाख हेक्टेयर पर पेड़ लगाना और 50 लाख हेक्टेयर जमीन पर बढ़ते हुए वनों का संरक्षण भी शामिल है। जिसके फलस्वरूप 30 लाख परिवारों को रोजगार मुहैया कराना साथ ही 50 से 60 लाख तन तक कार्बन डाइऑक्साइड में कमी लाने का लक्ष्य तय किया गया। इस तरह ग्रीन इंडिया में भारी भरकम बजट खर्च करने की परियोजना तैयार की गई है ।निश्चित तौर पर जलवायु परिवर्तन में होने वाले नुकसान को इस योजना से रोका जा सकता है। वहीं दूसरी ओर यदि डिजिटल इंडिया की बात करें तो ज्ञान के आधारित अर्थव्यवस्था में सुधार डिजिटल पद्धति से ही लाया जा सकता है। भारत देश जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए डिजिटलीकरण अत्यंत आवश्यक भी दिखाई देता है। डिजिटल विकास के पास भारत देश में दीमक की तरह फैले हुए भ्रष्टाचार को भी रोका जा सकता है। बिचौलियों की उपस्थिति को भी चुनौती दी जा सकती है वैसे डिजिटल इंडिया प्रशासन सब प्रशासन को काफी मददगार साबित होने वाला है। सरकारी कार्यालयों में समस्त कार्य प्रणाली पेपर रहित हो गए है डिजिटल टेक्नोलॉजी के साथ कार्य किए जाए तो समय के साथ अर्थव्यवस्था में बेहतरी लाई जा सकती है।

भारत में कोविड-19 केसों में भारी उछाल

नयी दिल्ली। भारत में एक दिन में कोरोना वायरस संक्रमण के 7,830 नए मामले सामने आने के बाद देश में अभी तक संक्रमित हुए लोगों की संख्या बढ़कर 4,47,76,002 हो गई। ये पिछले 223 दिन में भारत में दर्ज किए गए सर्वाधिक दैनिक मामले हैं। इससे पहले, देश में पिछले साल एक सितंबर को संक्रमण के सर्वाधिक 7,946 दैनिक मामले सामने आए थे। वहीं, देश में उपचाराधीन मरीजों की संख्या बढ़कर 40,215 पर पहुंच गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बुधवार सुबह आठ बजे जारी अद्यतन आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली, पंजाब और हिमाचल प्रदेश में दो-दो तथा गुजरात, हरियाणा, तमिलनाडु व उत्तर प्रदेश में एक-एक मरीज की मौत हो गई।

यादों का झरोखा

मैं तेरे दिल की धड़कन, तू मेरी परछाई।
यादों के झरोखों में, किरन सी तू लहराई।

परियों की कहानी सी तुम, चांद में देखा करता हूं।
हर पत्ते की आहट सुन, राह निहारा करता हूँ।
तकदीर मुझसे रूठी, परिंदे सी तन्हाई।
मैं तेरे दिल की धड़कन, तू मेरी परछाई।

हम-तुम कितने दूर हैं फिर भी, पास सदा ही रहते हैं।
दीवानगी की हद तक, हम प्यार तुम्हें ही करते हैं।
मैं गुल तू मेरी बुलबुल, बागों में बहार आई।
मैं तेरे दिल की धड़कन, तू मेरी परछाई।

नजरों की तो बात ही क्या, सपनों में समाये रहते हो।
सुरों की माला में गुँथकर, गीतों में सजाये रहते हो।
बेताब साँसों की सरगम, लेती है अंगड़ाई।
मैं तेरे दिल की धड़कन, तू मेरी परछाई।

डूबी जीवन नैया में तुम, माँझी बनकर आ जाओ।
तारों की चूनर, बदली का घूँघट, ओढ़ हमें न तरसाओ।
प्रेम की बारिश में लिपटी, सावन की घटा छाई।
मैं तेरे दिल की धड़कन, तू मेरी परछाई।

-अर्चना गुप्ता, लखनऊ

पुस्तक समीक्षा

क्या जानूं मैं मन्दिर–मस्जिद

अनिल मिश्र की रचनाएं सवाल बयां करती हैं

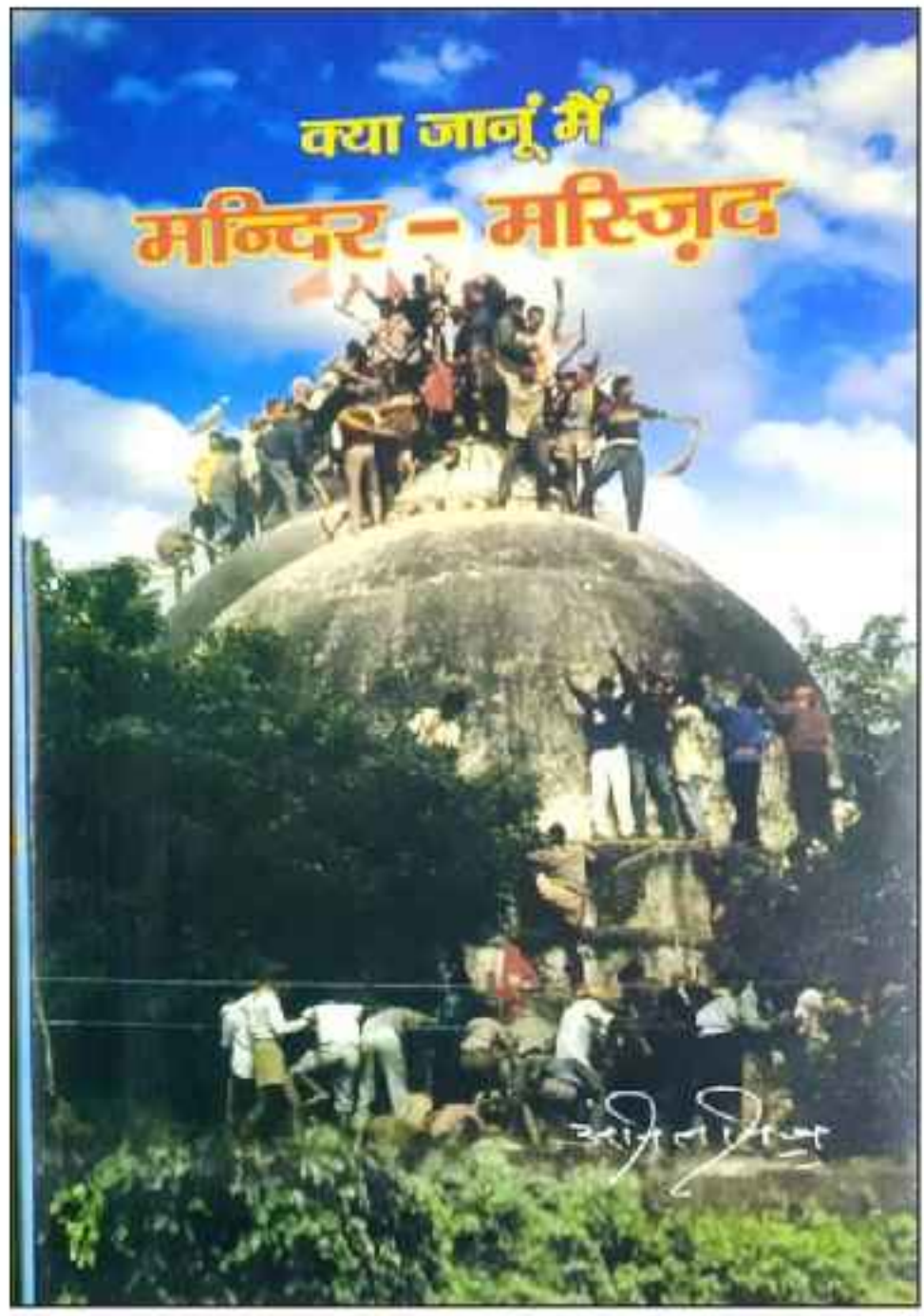

शब्दों की व्यंजना मनुष्य के अन्दर हलचल पैदा करती हैं. क्योंकि व्यक्त किये गये शब्दों की धार मनुष्य के दिमाग को चिन्तन की ओर ले जाती है. दिमाग एक ऐसा यंत्र है, जो हर समय चलायमान रहता है. अगर उसके सोचने की दिशा सार्थकता की ओर है, तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है,कि उसका लेखन समाजिक विसंगतियों के बदलाव में एक पहल का काम करेगा. रचनाकर्म भी जड़ता और तथस्टता के बीच अपने शब्दों का स्पन्दन करता है. शब्द ही हैं जो मनुष्य की चेतना को चैतन्यता की ओर ले जाते हैं. रचनाएं कैसी भी हों, वह मनुष्य को प्रभावित करती हैं. ढेर सारे शब्दों के बीच चंद शब्दों को बांधकर अभिव्यक्ति कर देना एक कुशल रचनाकार के बूते की बात है. ऐसा ही बहुत कुछ कविताओं के संकलन

क्या जानू मैं मन्दिर-मस्जिद में देखा जा सकता है.

अनिल मिश्र का पत्रकारिता जगत में लम्बा अनुभव रहा है. देश के प्रतिष्ठित अख़बारों में दशकों तक सेवाएं दीं. ख़ास बात यह है कि इनका आन्दोलन और ट्रेड यूनियन से साबक़ा रहा है. एक समय आन्दोलन और अनिल मिश्र एक दूसरे के पर्याय थे. 80 के दशक में दैनिक जागरण में कार्य करते हुए कर्मचारियों के हित में लम्बा आन्दोलन चलाया. भूख हड़ताल कर आख़िरकार कर्मचारियों के हित में न्याय दिलाया. ज़ाहिर है अनिल मिश्र संघर्षों के साथी हैं. ऐसे में आम लोगों की तक़लीफ़ों को उन्होंने बहुत क़रीब से देखा. राजनैतिक/सांस्कृतिक/समाजिक विषयों से जो विसंगतियां बाहर आयी उसे वह शब्दों की धार में बदलते रहे. जब काफ़ी कुछ धना हो गया तो अनिल जी ने सोचा क्यों न इसे क़िताब की शक्ल दी जाये, और पाठकों के हवाले किया जाये. उन्होंने ऐसा ही किया. विभिन्न रंगों से सजी कविताओं कि क़िताब बहुत ही सरल और सहज शब्दों में बग़ैर किसी आडम्बर के आम पाठकों को सुपुर्द कर दी.

जीवन का बहुत समग्र रचना संसार है. लेकिन मनुष्य भ्रम और यथार्थ के बीच झूलता रहता है. जब व्यक्ति का सच्चाई से सामना होता है, तो अनिल मिश्रा की यह रचना लोगों के सामने आती है:-

ज़िन्दगी ज़िन्दादिली से जीना चाहिये/ कल मरने के लिए/आज जीना चाहिए/ तमाम ख़ौफ़ ले जाते हैं/ ज़िन्दगी को गर्त में/ हौसला बुलन्दी पर होना चाहिए/ एक यही फ़लसफ़ा/ जो उठाता है गैरों को/ बस जज़्बाये दिलों में/ बावस्ता रहना चाहिए/ आदमियत किस क़दर खोती जा रही है. मानवता की छाती पर लोग बाग़ किस तरह मूंग दल रहे हैं. युद्ध हो या शांति का मैदान आदमी किसी भी क़ीमत पर कुछ खोना नही चाहता. इसी फ़लसफ़े पर अनिल मिश्र कुछ यूं कहते हैं:-

किसकी ताक़ में खड़ा है/ ऐ बहुरुपिए/ लिए बारूद का ढेर/ अपने कंधों पर/ अरे नांदा तू नही जानता/ अपने इधर भी/ अपने उधर भी/ जिस सीमा पर तू खड़ा है/ वह तेरी सीमा नही/ मात्र भ्रम है/ तेरी सीमा तो/ शांति,प्रेम और धर्म है7-

ज़ाति,मज़हब को लेकर अमूमन दुनिया में एक वर्ग दूसरे वर्ग के ख़िलाफ़ ज़हर उगलता रहता है. अब तक लाखों लोग सम्प्रदायवाद की भेंट चढ़ चुके हैं. ऐसे में मानवीय मूल्यों को सर्वोच्चता देते हुए अनिल की यह रचना देखिए:-

क्या जानू में मन्दिर-मस्जिद/ प्यार में मेरा दिल मतवाला/ मैं न जानूं सोना-चांदी/ आत्मरत्न की खान संभाला/ मैं न चाहूं हीरा-मोती/ मेरे मन में मणि की माला/ जीवन तो है बहता पानी/ सब माया है आनी जानी/ प्यार की मंज़िल मेरी राहें/ साँसों की बस यही कहानी/ आओ सब मिल रंग बिखेरें/ बने इंद्रधनुष सी माला/ नभ में फ़ैले शीतल चांदी/ धरती बने दुशाला।

बात वही है जो बहुत सहजता के साथ रख दी जाये. क्योंकि अगर रचनाएं पाठक वर्ग को समर्पित है तो आम बोल-चाल की भाषा में होनी चाहिए. और यह हुनर अनिल मिश्र की शब्द अभिव्यंजना में बखूबी दिखता है. हौसले को उड़ान देती हुयी इस रचना को महसूस किया ज सकता है:-

वो चिराग़ क्या/ जो आंधियों में बुझे/ वो रोशनी क्या/ जो अंधेरों से डरे/ आदमी-आदमी नही/ जिसमें आदमियत न हो/ ऐसे हैवानों से आख़िर/ आदमी होकर क्यों आदमी से डरे/ वो चिराग़ क्या..आलम हो कितना भी ख़ौफ़जवां/ रोशन करो तुम जहां/ डरते हैं वे... सत्य से होते जो परे/ चंद मुट्ठी भर जिन्हें/ बंद कर लो मुट्ठियों में/ यही बन पड़े हैं विषधर/ कुचलना होगा इनका फ़न/ चाहे जहां हो ये पड़े/ वो चिराग़ क्या...

जीवन जीना आसान नही होता. वह चुनौतियों से भरा होता है. रचना,गीत,ग़ज़ल हमें चुनौतियों में लड़ने का माद्दा पैदा करते है. एक रचनाकार वही है जो मुश्किलों को अपने शब्दों की धार बना दें. इन्हीं मुश्किलों पर अनिल मिश्र का अंदाज़ कुछ यूं है:-

मुश्किलें राहों को/ आसान करती हैं/ बेजुबान के लिए/ ये जुबान बनती है/ कौन कहता है/ आसमान के सितारे/ गिने नही जा सकते/ किसी को रोशनी/ देकर तो देखो/ रोशनी के कण ही तो/ सितारों का समूह है/ दिखते ज़रूर अलग-अलग/ पर किसी पिण्ड का ही रूप है/ मुश्किलें राहों...

इस व्यवस्था में मनुष्य क्या से क्या हो गया है. एक तरफ़ जहाँ उसके सामने ज़िन्दा रहने का संकट है वहीं दूसरी तरफ़ तमाम ख़तरे भी मौजूद है. इन तमाम परिस्थितियों में आदमी के वजूद को लेकर अनिल की यह रचना एक नया तेवर पेश करती गई:-

सच के लिए/ पत्थर भी खाने को/ तैयार हैं/ क़ीमत जो भी हो/ चुकाने के लिए/ तैयार हैं/ ग़रजे वे तो/ उससे कहीं/ कमतर नही/ ज़िन्दगी जाये भी/ तो ग़म नही/ पर कमज़ोर पर/ कहीं जुल्म हो/ यह कतई बर्दाश्त नही/ मैं नेल्सन /न ही गांधी/ पर उनकी चलायी/ आंधी का शिकार हूं/ सच के लिए...

मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ है. संवेदनाऐं बंजर हुयी हैं. आदमियत की जगह खुदग़र्ज़ी ने ले रक्खी है. आदमी स्वयं में केंद्रित होकर मशीन बनता जा रहा है. आदमीयत के इन तमाम विपरीत पक्षों को केंद में रखकर जब शब्दों का विस्फ़ोट होता है तो अनिल की यह रचना सामने आती है:-

पत्थरों के इस शहर में/ मैं भी पत्थर हो गया/ कल रात/ मेरे पड़ोसी का/ मौजूदगी में मेरी/ भूख की चादर/ ओढ़कर सो गया/ पत्थरों के इस... मेरे वजूद पर/ लगी ऐसी ठोकर की/ सड़क के किनारे का/ कोई पत्थर सा/ होकर मैं रह गया/ पत्थरों के इस...

अनिल मिश्र बहुआयामी व्यक्तित्व है. देश-दुनिया-समाज पर गहरी पकड़ रखते हैं. जीवन के झँझावंतों से तपते हुए आज भी संघर्षरत है. पर रचनाओं से सुसज्जित इनका संकलन गहरे तक वर्तमान चुनौतियों पर सोचने पर विवश करता है. यह संकलन व्यापक स्तर पर पढ़ा जाना चाहिए. वर्तमान स्थितियों में ऐसे काव्य संकलन मनुष्य की चेतना में स्पन्दन करते हैं।

मुख्यमंत्री योगी ने भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों के खिलाफ जांच के दिए निर्देश

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि साइबर अपराध पर नियंत्रण के लिए जोन एवं जनपद स्तर पर गठित सेल का प्रभावी उपयोग करें और भ्रष्टाचार के मामले में कठोर कार्रवाई करें।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भ्रष्टाचार में संलिप्त लोगों के खिलाफ जांच कर कठोरतम कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। उन्होंने राज्य विशेष अनुसंधान दल एवं सतर्कता अधिष्ठान को निर्देश दिए कि लंबित विवेचनाओं को समयबद्ध ढंग से गुणवत्ता व गोपनीयता के साथ पूरा

किया जाए। सीएम ने कहा कि सतर्कता अधिष्ठान प्रत्येक माह मुख्यमंत्री कार्यालय को इनकी प्रगति से अवगत कराए।

मुख्यमंत्री योगी अपने आवास पर पुलिस विभाग के साइबर क्राइम, सतर्कता अधिष्ठान एवं राज्य विशेष अनुसंधान दल के कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। सीएम ने कहा कि प्रदेश सरकार भ्रष्टाचार पर लगातार वार कर रही है। साइबर अपराध पर नियंत्रण के लिए जोन एवं जिला स्तर पर गठित की गई साइबर सेल का प्रभावी उपयोग किया जाए। सीएम ने कहा कि साइबर हेल्प डेस्क की मदद से साइबर अपराधों पर प्रभावी कार्रवाई की जाए। केंद्र सरकार के मंत्रालय के साथ समन्वय स्थापित करते हुए विभिन्न पोर्टल साइट्रेन व सीसीपीडब्ल्यूसी आदि का उपयोग किया जाए। इनके प्रभावी उपयोग के लिए पुलिस विभाग के कर्मचारियों को दिए जा रहे प्रशिक्षण की गति को तेज किया जाए। उन्होंने निर्देशित किया कि साइबर अपराधों एवं उनसे बचाव के तरीकों के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए। योगी ने कहा कि प्रदेश सरकार भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस की नीति पर लगातार काम कर रही है। जांच एजेंसियों के कर्मचारियों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान से दक्ष किया जाए।

अमित शाह की गर्जना

रुपेन्द्र उपाध्याय

पड़ोसी देश चीन छल-कपट और अपनी कुटिल चालों से भारत के लिए हमेशा परेशानी खड़ी करता आया है। वह अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता है। उसके लिए मानवीय मूल्यों, नीति और नैतिकता का कोई मोल नहीं है। वह यह भी जानता है कि उसके सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली देश बनने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा भारत ही है। चीन की हर चाल को विफल करने के लिए भारत ने भी अपनी कमर कसी हुई है। पूर्व में जब भी भारतीय राजनीतिज्ञ अरुणाचल के दौरे पर जाते थे तो चीन उस पर यह कहकर आपत्ति जताता था कि अरुणाचल प्रदेश उसका है। इस बार गृहमंत्री अमित शाह ने अरुणाचल की जमीन पर खड़े होकर चीन को करारा जवाब दिया है और कहा है कि अब भारत की एक इंच जमीन पर कोई भी कब्जा नहीं कर सकता। कोई भी भारत की क्षेत्रीय अखंडता पर सवाल नहीं उठा सकता। चीन ने गृहमंत्री अमित शाह के दौरे का विरोध करते हुए कहा था कि भारत के गृहमंत्री की गतिविधियों को अपनी क्षेत्रीय संप्रभुत्ता का उल्लंघन मानता है। भारत के लिए चीन की अनर्गल बयानबाजी कोई नई नहीं है। भारत सरकार ने हर बार चीन के दावों को खारिज किया है। कुछ दिन पहले अपनी विस्तारवादी मंशा का इजहार करते हुए चीन ने अरुणाचल प्रदेश के 11 स्थानों के नामों में बदलाव किया।

चीन भी यह जानता है कि कुछ स्थानों के नाम बदलने से अरुणाचल की स्थिति में वास्तव में कोई बदलाव नहीं आने वाला। अरुणाचल के नाम बदलने की चीन की यह तीसरी सूची है। 2017 में उसने पहली बार अरुणाचल के 6 स्थानों के नाम बदलने की सूची जारी की थी। अब तक वह 32 स्थानों के नाम बदल चुका है। कुछ वर्ष पहले चीन ने अरुणाचल के कुछ युवाओं को एक पेपर पर चीन आने की अनुमति दी थी और कहा था कि अरुणाचल चीन का अंग है, इसलिए उन्हें चीन आने के लिए वीजा लेने की जरूरत नहीं है। हाल ही में अरुणाचल में हुई जी-20 की एक बैठक में चीन ने हिस्सा लेने से मना कर दिया था। हाल ही के वर्षों में डोकलाम और लद्दाख में दोनों देशों की सेना आमने-सामने आ चुकी है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर उसने बड़ी संख्या में सैनिकों को तैनात किया हुआ है और सीमा के निकट कई तरह के निर्माण कार्य कर रहा है। डोकलाम और गलवान में उसे पहली बार भारत के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। इन हरकतों के जवाब में भारत ने भी सैनिकों को मोर्चे पर खड़ा कर दिया है तथा सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास के लिए कई परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। हालांकि नियंत्रण रेखा पर अभी शांति है, पर दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों की कई चरण की बातचीत के बाद भी चीन ने अपने सैनिकों को पीछे नहीं हटाया है। भारत की मांग है कि सीमा विवाद पर किसी भी तरह की ठोस बातचीत शुरू करने से पहले नियंत्रण रेखा पर अप्रैल 2020 से पहले की स्थिति बहाल होनी चाहिए। हालांकि चीन ने कई बार आश्वसन दिया है कि वह अपनी टुकड़ियों को पीछे कर लेगा, पर ऐसा हुआ नहीं। विभिन्न बहुपक्षीय मंचों और परस्पर वार्ताओं में चीन शांति और सहयोग की आकांक्षा तो व्यक्त करता है लेकिन वास्तव में वह अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहता है। भारतीय क्षेत्रों पर चीन के आक्रामक दावों को तो छोड़ दें, नियंत्रण रेखा की व्यथास्थिति में एकतरफा बदलाव लाने की किसी कोशिश को भी भारत स्वीकार नहीं कर सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अब चीन से आंखें झुका कर नहीं बल्कि आंखों में आंखें डालकर बात करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पूर्व की सरकारों ने चीन को लेकर काफी गलतियां कीं। पूर्व की सरकारों की नीतियां चीन से आंखें बचाकर चुप्पी धारण करने की रही। अधिकांश राजनीतिज्ञ पूर्व प्रधानमंत्रियों जवाहर लाल नेहरू और अटल बिहारी वाजपेयी की यह कहकर आलोचना करते हैं कि इनकी भूलों के कारण ही तिब्बत और ताइवान चीन के हवाले कर दिए गए और चीन एक-एक इंच करके भारत की भूमि को हड़पता रहा। यह भी वास्तविकता है कि अटल जी ने चीन को इस बात के लिए राजी किया था कि वह सिक्किम को भारत का हिस्सा माने। सच तो यह है कि चीन ने कभी एलएसी का सम्मान ही नहीं किया। चीन अपनी कुटिल चालों से अरुणाचल पर अपना दावा गर्म बनाए रखना चाहता है ताकि वह भारत से सीमा विवाद पर होने वाली वार्ता में सौदेबाजी कर सके। चीन को इस बात का अहसास है कि भारत अब 1962 वाला भारत नहीं है। अगर उसे इस बात का एहसास न होता तो भारत से युद्ध छेड़ चुका होता। चीन से सटी सीमाओं पर भारत ने भी अब अपनी पूरी तैयारी शुरू कर दी है। आईटीबीपी अब पहले से ज्यादा आक्रामक है। भारतीय सेना वहां पूरी तरह से एक्शन मोड में है। पूर्वी लद्दाख सीमा पर आधुनिक हथियार तैनात है। सीमा पर बुनियादी ढांचे का विकास तेजी से किया जा रहा है।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह लगातार सीमाओं का जायजा लेते रहे हैं। गृहमंत्री अमित शाह ने चीन की सीमा पर किविथू गांव में वाइब्रेंट विलेज योजना की शुरूआत की है। वाइब्रेंट विलेज का मकसद एलएसी से सटे गांव को विकसित करना और वहां बुनियादी ढांचे को विकसित करना है। यह चीन की उस योजना का करारा जवाब है जिसके तहत वह अपनी सीमा के आसपास गांव बसा रहा है। वाइब्रेंट विलेज योजना के तहत सड़कों का जाल बिछाया जाएगा ताकि चीन से किसी भी तरह के खतरे के चलते बेहद कम समय में सैनिक और हथियार सीमाओं पर पहुंचाए जा सकें। इन सम्पर्क मार्गों का काफी महत्व होगा। 1962 के युद्ध में भी ध्किविथू के जवानों ने चीन से जंग लड़ते समय बहादुरी दिखाते हुए अपनी शहादतें दी थीं। भारत में सूर्य की पहली किरण इसी भूमि पर पड़ती है। यह भारत माता के मुकुट का एक उज्जवल गहना है। भारत अब ड्रैगन का फन दबाने में सक्षम है।

डीएम सूर्य पाल गंगवार ने इंट्रीग्रेटेड कोविड कन्ट्रोल एंड कमाण्ड सेंटर का किया निरीक्षण

लखनऊ (यूएनएस)। लखनऊ जिलाधिकारी सूर्य पाल गंगवार द्वारा स्मार्ट सिटी में बनाए गए इंट्रीग्रेटेड कोविड कन्ट्रोल एंड कमाण्ड सेंटर का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी द्वारा कन्ट्रोल सेंटर के द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा कर निर्देश दिए। जिलाधिकारी द्वारा बताया कोविड लक्षणात्मक रोगियों की तत्काल जांच कराते हुए उनको मेडिकल किट उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए। साथ ही कमांड सेंटर के द्वारा कॉल करके होम आइसोलेशन के रोगियों का प्रतिदिन फीडबैक लिया जाए। कंट्रोल रूम प्रभारी द्वारा बताया गया की वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 100 से अधिक कॉल्स प्राप्त हो रही है। जिसमे से अधिकतर काले टेस्टिंग कराने और मेडिकल किट की आवश्यकता से संबंधित होती है।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा कमांड सेंटर में भी स्टाफ की संख्या को बढाने के साथ ही आरआरटी टीमों की संख्या को भी बढ़ने के निर्देश दिए गए। उक्त के बाद जिलाधिकारी द्वारा डॉक्टर्स केबिन और हैलो डाक्टर सेवा के रूम का भी निरीक्षण किया गया। इसके लिए मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देश दिए गए की डॉक्टर्स केबिन में नियुक्त होने वाले सभी डाक्टरों की ट्रेनिंग कराना सुनिश्चित किया जाए। साथ ही कोविड संबंधित किसी भी जानकारी व समस्या के लिए हेल्पलाइन नम्बर 0522-4523000 पर कोई भी व्यक्ति काल करके अपनी कोविड से सम्बंधित समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है।

पुलिस ने मुठभेड़ में ढाई लाख के इनामी माफिया को ढेर किया

बिजनौर। उत्तर प्रदेश में पिछले साल पुलिस हिरासत से फरार हुए प्रदेश स्तरीय माफिया आदित्य राणा को एक मुठभेड़ में ढेर कर दिया गया है। उसपर ढाई लाख रुपये का इनाम था। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ के दौरान बदमाशों की तरफ से की गई गोलीबारी में पांच पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं। पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने बुधवार को बताया, 11-12 अप्रैल की रात बिजनौर पुलिस की आदित्य राणा गिरोह के साथ मुठभेड़ हुई जिसमें राणा को घायल अवस्था में पुलिस ने हिरासत में लिया और उसकी अस्पताल में उपचार के दौरान मृत्यु हो गई है।

राष्ट्रीय लोकदल से छिना राज्य स्तरीय पार्टी का दर्जा

अब चुनाव चिन्ह हैंडपंप पर मंडराया खतरा

लखनऊ (यूएनएस)। चुनाव आयोग ने जयंत चौधरी की पार्टी राष्ट्रीय लोकदल का राज्य स्तरीय पार्टी का दर्जा समाप्त कर दिया है, इससे उसके पास सिंबल नहीं रह जाएगा। राष्ट्रीय लोकदल के मुखिया जयंत चौधरी ने चुनाव आयोग से गुहार लगाई है कि निकाय चुनाव में उनकी पार्टी के प्रत्याशियों को हैंडपंप चुनाव चिह्न ही आवंटित किया जाये। फैसला चुनव आयोग को करना है। कभी किसान राजनीति के अगुवा रहे पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की राजनीतिक विरासत आज कमजोर पड़ती दिख रही है। उनके दिवंगत बेटे चौधरी अजित सिंह और पौत्र जयंत चौधरी को 2019 में लोकसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था। अब राष्ट्रीय लोकदल के पास एक रिजर्व सिंबल नल चुनाव चिह्न नहीं रह जाएगा, क्योंकि किसी भी पार्टी को राज्य स्तरीय दल मिलने के लिए जरूरी होता है कि विधानसभा चुनाव में 3 प्रतिशत सीटें मिली हों या फिर न्यूनतम 3 सीट हासिल की हो। 2022 में रालोद ने सपा के साथ गठबंधन करते हुए 33 सीटों पर चुनाव लड़ा था, लेकिन उसे महज 8 सीटों पर ही जीत मिली थी। दुनिया में चुनाव चिन्ह का इतिहास काफी पुराना है।

1789 में अमेरिका में अलेक्जेंडर हैमिल्टन के नेतृत्व में पहली संगठित राजनीतिक पार्टी बनी थी, जिसका नाम फेडरलिस्ट पार्टी था। इस पार्टी का निशान एक वृत्ताकार छल्ले यानी साइकिल की रिंग के जैसा था इस छल्ले का रंग काला था। यहीं से दुनियाभर के संगठित दलों के बीच चुनाव चिन्ह या पार्टी सिंबल की प्रक्रिया शुरू हुई थी गैर मान्यता प्राप्त पार्टी चुनाव आयोग में रजिस्टर्ड तो होती हैं लेकिन इन्हें मान्यता नहीं होती है। क्योंकि इन पार्टियों ने इतने वोट हासिल नहीं किए होते हैं कि इन्हें क्षेत्रीय पार्टी का दर्जा दिया जा सके। भारत में ऐसी लगभग 2796 पार्टियां हैं। 1985 में स्व चौधरी चरण सिंह ने लोकदल का गठन किया था। इसी बीच 1987 में चौधरी अजित सिंह के राजनीतिक हस्तक्षेप के चलते पार्टी में फिर विवाद हुआ और लोकदल अ का गठन किया गया। इसके बाद लोकदल अ का 1988 में जनता दल में विलय हो गया।

जब जनता दल में आपसी टकराव हुआ तो 1987 लोकदल अ और लोकदल ब बन गया। फिर इस दल का 1988 में जनता पार्टी में विलय हो गया था। फिर जब जनता दल बना तो चौधरी अजित सिंह का दल उसके साथ हो गया। लोकदल अ यानि चौधरी अजित सिंह का 1993 में कांग्रेस में विलय हो गया था। चौधरी अजित सिंह ने एक बार फिर कांग्रेस से अलग होकर 1996 में चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की भाकियू की राजनैतिक विंग किसान कामगार पार्टी की कमान सम्भाली थी। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैत से नाराजगी बढ़ने के बाद 1998 में इस दल का नाम चौधरी अजित सिंह ने बदलकर राष्ट्रीय लोकदल कर दिया था। इस दल ने कई बार अपना रूप और नाम बदला। कभी किसी से समझौता किया तो कभी किसी दल में विलय किया। चौधरी अजित सिंह अनेक बार सत्ता की चाबियां हाथ में लेकर चले तो कई बार हासिए पर भी पहुंच गए थे। प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव सरकार की सरकार बचाने के लिए आरोपों के कारण चौधरी अजित सिंह बुरे दिन भी देखने को मिले थे। सीबीआई के अनुसार 1993 में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव आया था और सरकार को बचाने के लिए प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के लगातार संपर्क में रहने वाले भजनलाल ने एक और मोर्चा खोल दिया था। उनके निशाने पर जनता दल अ के नेता चौधरी अजित सिंह और उनके सांसद थे।

महिलाओं को जल संरक्षण का प्रशिक्षण देगा जलजीवन मिशन

लखनऊ (यूएनएस)। यूपी के स्कूलों और आंगनबाड़ी केन्द्रों को स्वच्छ जलापूर्ति देने के मकसद से योगी सरकार जल संरक्षण, जल प्रबंधन और जागरूकता पर जोर देते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को गति देने जा रही है। प्रदेश में एएनएम, आशा बहू, स्वयं सहायता समूह व आंगनबाड़ी की महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लोगों को जल के महत्व, जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के साथ ही स्वच्छ पेयजल पीने से रोगमुक्त काया के बारे में जानकारी देंगी। सरकार का प्रयास है कि जल जीवन मिशन जैसी महत्वाकांक्षी योजना से एक ओर छात्रों को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने संग प्रदेश भर के आंगनबाड़ी केन्द्रों व स्कूलों समेत एएनएम, आशा बहुओं, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) को जल्द ही जल संरक्षण, जल प्रबंधन और जागरूकता कार्यक्रमों से जुड़ा प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसमें यूपी के 822 ब्लॉक के कुल 5,23,746 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

प्रमोशन तो मिलेगा लेकिन वेतन नहीं बढ़ेगा

बिजली विभाग के उत्पादन निगम के जूनियर इंजीनियरों को लगा झटका

लखनऊ (यूएनएस)। बिजली विभाग के इंजीनियरों को एक और झटका लगा है। अब 19 साल की नौकरी के बाद प्रमोशन तो मिलेगा लेकिन बढ़ा हुआ वेतनमान नहीं मिल पाएगा। ऐसे में एक इंजीनियर को रिटायरमेंट के समय हर महीने का करीब 50 से 70 हजार रुपए तक का नुकसान होगा। अभी तक के नियमों के अनुसार उसको 8700 का ग्रेड पे मिलता है। लेकिन अब प्रमोशन मिलेगा लेकिन ग्रेड पे पिछला वाला ही रहेगा। ऐसे में कर्मचारियों को 19 साल की नौकरी के बाद औसतन हर महीने कम से कम 50 हजार रुपए का नुकसान होने वाला है। जो आदेश जारी किया गया है उसमें कहा गया है कि 9 साल की नौकरी पूरी होने से पहले प्रमोशन मिल जाता था। उन्हें 19 साल की सेवा पूरी होने पर 8700 का वेतनमान मिलता था। मगर अब ऐसा नहीं हो सकेगा। इसका विरोध भी शुरू हो गया है। उप्र जूनियर इंजीनियर संगठन के अध्यक्ष जयप्रकाश का कहना है कि यह फैसला गलत है। इससे कम से कम एक-एक इंजीनियर को 50,000 रुपए का नुकसान होगा। अभी तक की व्यवस्था में सरकारी कर्मचारी को तीन प्रमोशन वेतनमान मिलता है। जूनियर इंजीनियर की भर्ती के समय कर्मचारी को 4600 रुपए वेतनमान मिलता है। उसके बाद 9 साल की नौकरी पूरी होने के बाद 4800 का वेतनमान और 14 साल पर 5400 रुपए का वेतनमान मिलता था। 19 साल की सेवा पूरी होने की स्थिति में 6600 का वेतनमान मिलता है। ऐसे में जूनियर इंजीनियर 9 साल की सेवा से पहले ही एई पद पर प्रमोट होता है तो उसको 5400 रुपए का वेतनमान मिलता है। ऐसे में 14 साल की सेवा पूरी होने पर उसे 6600 वेतनमान और 19 साल की सेवा पूरी होने पर 8700 वेतनमान मिलता है। लेकिन अब यह व्यवस्था नहीं रहेगी उत्पादन निगम के इस फैसले के खिलाफसभी संगठन एक हो गए हैं। संघर्ष समिति के संयोजक शैलेन्द्र दुबे ने कहा कि इस मुद्दे को लेकर तीन दिसंबर को ऊर्जा मंत्री के साथ समझौता हुआ था। ये आदेश समझौते का खुले तौर पर उल्लंघन है। जूनियर इंजीनियर संगठन के अध्यक्ष जयप्रकाश ने भी इस फैसले का विरोध करते हुए चेयरमैन को पत्र लिखा है।

मोहनलालगंज और गोसाईंगंज में अवैध प्लाटिंग पर चला एलडीए का बुलडोजर

लखनऊ (यूएनएस)। अवैध निर्माण पर एलडीए का बुलडोजर जारी है। बुधवार को शहर के अलग-अलग इलाकों में चले अभियान के दौरान करोड़ों की जमीन पर वीसी इंद्रमणि त्रिपाठी के निर्देश पर अभियान चलाया गया। मोहनलालगंज और गोसाईंगंज में अभियान चलाकर लगभग 20 बीघा जमीन पर की जा रही अवैध प्लाटिंग पर ध्वस्ती करण की कार्रवाई की गई। प्रवर्तन जोन-2 के जोनल अधिकारी देवांश त्रिवेदी ने बताया कि जगदीश वर्मा द्वारा गोसाईंगंज में न्यू जेल रोड पर खुजौली मार्केट के पास लगभग 15 बीघा जमीन पर अनाधिकृत रूप से प्लाटिंग किया जा रहा है। यहां सेलिब्रेट सिटी नाम से कालोनी विकसित की जा रही थी। इसके अतिरिक्त सरस्वती देवी, आईबी तिवारी, राज चौधरी व ललित शुक्ला द्वारा मोहनलालगंज के खुजौली के उद्धत खेड़ा में लगभग 5 बीघा जमीन पर अवैध प्लाटिंग का कार्य कराया जा रहा था। एलडीए वीसी ने बताया कि दोनों ही मामले में एलडीए के विहित न्यायालय में सुनवाई चल रही थी। इसमें विपक्षियों द्वारा कोई स्वीकृत मानचित्र एलडीए को नहीं दिया गया। चोरी-छिपे विकास कार्य कराते हुए प्लाटिंग का

कार्य किया जा रहा था। इस पर विहित न्यायालय द्वारा ध्वस्तीकरण आदेश पारित किए गए थे। अभियान के दौरान सहायक अभियंता वाई पी सिंह, अवर अभियंता उस्मान अली, स्थानीय पुलिस, सहायक अभियंता वाईपी सिंह लगातार अभियान में शामिल रहे।

ई-रिक्शा की टक्कर से निजी सुरक्षा-गार्ड की मौत

लखनऊ (यूएनएस)। हजरतगंज में तेज रफ्तार ई रिक्शा ने पैदल जा रहे निजी सुरक्षा गार्ड अशोक कश्यप 32 वर्ष को टक्कर मार दी। घायल को सिविल में भर्ती कराया। जहां उसकी मौत हो गई। उधर, बीबीडी इलाके में तेज रफ्तार वाहन ने सड़क किनारे खड़े निजी सुरक्षा गार्ड वीरेंद्र सिंह (64) को कुचल दिया। जिससे उनकी मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक हजरतगंज स्थित बटलर पैलेस कॉलोनी का रहने वाला अशोक प्राइवेट सिक्योरिटी गार्ड था। पत्नी सोनी ने बताया वह लायएमसीए बिल्डिंग के पास एक बिल्डिंग में प्राइवेट सिक्योरिटी गार्ड था। शाम को वह पैदल रोड पार कर रहा था। इतने में एक ई रिक्शा चालक ने तेजी से टक्कर मार दी। जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया। इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां उसने दम तोड़ दिया। परिवार में दो बेटे हैं। अशोक ही घर की कमाई का जरिया था।

राज्य संग्रहालय एवं प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय नई दिल्ली के मध्य एमओयू साइन

पर्यावरण शिक्षा की दिशा में होंगे बहुआयामी प्रयास

लखनऊ (यूएनएस)। राज्य संग्रहालय, लखनऊ प्रदेश का प्रतिष्ठित प्राचीनतम बहुउद्देश्यीय संग्रहालय है, जहाँ पुरातत्व, प्राकृतिक इतिहास, सज्जा कला, कलात्मक वस्तुएं एवं मुद्राशास्त्र से सम्बन्धित उत्कृष्ट कलाकृतियों का अदभुत संग्रह है। कलाकृतियों के संरक्षण, प्रदर्शन, शोध तथा प्रकाशन के साथ संग्रहालय द्वारा समय-समय पर अस्थाई, स्थाई प्रदर्शनी वीथिकाओं का पुनर्गठन, तकनीकी अधिकारियों, कर्मचारियों हेतु कार्यशाला प्रबुद्ध वर्ग, शोधार्थियों हेतु सेमिनार, कला अभिरूचि पाठ्यक्रम एवं विविध शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है देश-विदेश की धरोहर से सम्बन्धित जानकारी को देश के विभिन्न अंचलों तक पहुँचाने एवं राज्य संग्रहालय, लखनऊ के तकनीकी अधिकारियों, कर्मचारियों के ज्ञान वर्धन तथा शैक्षिक कार्यक्रमों में विविधता लाये जाने के उद्देश्य से शासन कीअपेक्षानुसार राज्य संग्रहालय लखनऊ एवं देश के अन्य संग्रहालयों, संस्थाओं के मध्य एमओयू की कार्यवाही निरन्तर की जा रही है। राज्य संग्रहालय लखनऊ एवं राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली के मध्य एमओयू की कार्यवाही आज 12 अप्रैल को पर्यटन भवन गोमती नगर में सम्पन्न हुयी। देश की स्वतन्त्रता की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर 1972 में स्थापित प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली पर्यावरण पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रकृति के संरक्षण की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। यह संग्रहालय प्राकृतिक धरोहरों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए भारत की स्वतन्त्रता के रजत जयन्ती समारोह में राष्ट्रीय स्तर की संस्था के रूप में नामित की गयी थी। राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, पर्यावरण शिक्षा को समर्पित संस्था है। देश की समृद्ध प्राकृतिक धरोहर और प्राकृतिक विज्ञान भूविज्ञान वनस्पति विज्ञान और प्राणि विज्ञान को दर्शाने और उसके महत्त्व को उजागर करने के उद्देश्य से निर्मित विषयगत प्रदर्शनी, वीथिकाएं खोज कक्ष डिस्कवरी रूम गतिविधि कक्ष जैसे अनुभवात्मक संसाधन केन्द्र और संस्थान द्वारा आम जनता तक पहुँचने के लिए आयोजित शैक्षिक गतिविधिया इसकी पहचान है।

मुख्य सचिव ने देखे महिला स्वयं सहायता समूहों के कार्य

लखनऊ (यूएनएस)। मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश, शासन द्वारा संजय आर भूसरेड्डी, अपर मुख्य सचिव, चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग के साथ सीतापुर जिले का भ्रमण किया गया। भ्रमण के दौरान जिले में गन्ना विकास विभाग के अधीन गठित महिला स्वयं सहायता समूहों के कार्यों की समीक्षा करते हुए ग्रामीण महिला शक्ति द्वारा उन्नत गन्ना बीज वितरण कार्यक्रम में गतिशीलता लाने के दृष्टिगत महिला स्वयं सहायता समूहों को दिशा निर्देश दिये गये। संजय आर भूसरेड्डी द्वारा बताया गया कि प्रदेश के विभिन्न गन्ना उत्पादक जनपदों में ''ग्रामीण महिला शक्ति द्वारा उन्नत गन्ना बीज वितरण कार्यक्रम'' के अन्तर्गत गठित महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा लाखों की संख्या में बड तैयार किये जाते हैं, इसलिये प्रत्येक बड अथवा बड चिप को सफाई से पृथक करने के लिये कटर में लगे चाकू की धार तेज होना आवश्यक है, जिससे बड एवं बड चिप फटे नहीं तथा उसकी उत्तरजीविता प्रभावित न हो एवं जमाव भी शत-प्रतिशत संभव हो सके। इस हेतु बड कटर में तेज धार के चाकूओं का उपयोग किये जाने के संबंध में महिला स्वयं सहायता समूहों को सलाह एवं प्रशिक्षण प्रदान किये जाने के लिये गन्ना विकास परिषदों को आवश्यक निर्देश जारी किये गये हैं उन्होंने बताया कि स्थलीय भ्रमण के दौरान प्रकाश में आया कि कतिपय महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा गन्ने की बड की कटाई हेतु उपयोग किये जा रहे बड कटर का चाकू टूट जाने अथवा चाकू की धार कुन्द हो जाने एवं बड कटर का चाकू तेज न होने के कारण प्रायः बड एक झटके में नहीं निकलते तथा फट जाते हैं, जिससे उनका जमाव प्रभावित होता है। परिणामस्वरूप महिला स्वयं सहायता समूहों को गन्ने की पौध तैयार करने हेतु न केवल बीज के लिये अधिक गन्ने की आवश्यक होती है बल्कि उन्हें बड की कटाई हेतु अनावश्य रूप से अधिक श्रम भी करना पड़ता है उक्त निरीक्षण के दौरान विभाग के अधीन गठित महिला स्वयं सहायता समूहों के कार्यों में गतिशीलता लाने एवं उनके श्रम को कम करने हेतु श्री भूसरेड्डी द्वारा जिले के संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये महिला समूहों के पास उपलब्ध संसाधनों का निरीक्षण कराया जाये।

अब बनेगी ट्रिपल इंजन की सरकारः सिद्धार्थनाथ सिंह

लखनऊ (यूएनएस)। निकाय चुनाव की घोषणा के बाद बीजेपी ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। इसी कड़ी में बीजेपी लखनऊ महानगर ने बुधवार को राज एस्टेट में 'प्रभावी मतदाता सम्मेलन' आयोजित किया। इस दौरान पूर्व मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ कुमार सक्सेना चीफगेस्ट रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता लखनऊ नगर निगम चुनाव संयोजक अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने की। वहीं इस सम्मेलन के संचलन भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अभिषेक खरे ने किया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए सिद्धार्थ नाथ सिंह ने कहाद्द ḳकार्यक्रम का स्वरूप देख कर लग रहा है की लखनऊ महानगर के 110 वार्ड में भाजपा 80 सीटें जीतने जा रही है। जिसको भाजपा का टिकट मिलेगा उसकी जीत सुनिश्चित है। हम सब को जनता के बीच जाकर बताना है कि डबल इंजन की सरकार चल रही है। आप इसको ट्रिपल इंजर की सरकार बनाएं।

2014 में नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद स्वर्ण दशक आया है। नेहरू जी के काल में जो धारा 370 लगी थी मोदी जी ने उसको हटाया। पीएम मोदी के युग में हमारी सेना दुश्मन सेना को मुंहतोड़ जवाब देती है। साथ ही डॉ अरुण कुमार सक्सेना ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में देश का सम्मान बढ़ा है।

सपा के साथ मिलकर निकाय चुनाव लड़ेगा रालोद

लखनऊ (यूएनएस)। राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) ने बुधवार को कहा कि वह आगामी नगरीय निकाय चुनाव समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ मिलकर लड़ेगा और पार्टी जल्द ही उम्मीदवारों के नामों की घोषणा करेगी। रालोद के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे ने बुधवार को यहां कहा, रालोद समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर नगरपालिका चुनाव लड़ेगा और सपा-रालोद गठबंधन के उम्मीदवारों के नामों की घोषणा जल्द की जाएगी। दुबे ने इस बात पर भी जोर दिया कि उनकी पार्टी अपने आधिकारिक चिन्ह हैंडपंप पर चुनाव लड़ेगी। दुबे ने कहा, उत्तर प्रदेश में होने वाले नगर निगम चुनाव में राष्ट्रीय लोकदल के प्रत्याशी हैंडपंप के चिन्ह पर चुनाव लड़ेंगे। राष्ट्रीय लोकदल राज्य निर्वाचन आयोग में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल के रूप में पंजीकृत है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि रालोद का 'हैंडपंप' राज्य चुनाव आयोग में पंजीकृत चुनाव चिन्ह है।

रालोद के चुनाव चिन्ह 'हैंडपंप' को लेकर कोई संदेह नहीं है। राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) का राज्य स्तरीय दल का दर्जा वापस लिए जाने के बाद मंगलवार को पार्टी अध्यक्ष जयंत चौधरी ने उत्तर प्रदेश राज्य निर्वाचन आयुक्त को पत्र लिखकर मांग की थी कि प्रदेश के आगामी स्थानीय नगरीय निकाय चुनावों में उनके उम्मीदवारों को पार्टी का चुनाव चिह्न हैंडपंप ही आवंटित किया जाए।

नल कनेक्शन देने में यूपी बनेगा नंबर वन राज्य

लखनऊ (यूएनएस)। यूपी के 22 जिलों में नल कनेक्शन देने का आंकड़ा 50: के पार हो चुका है। तीन सबसे अच्छे जिलों को विभागीय मंत्री स्वतंत्र देव सिंह की तरफसे सम्मानित किया जाएगा। स्वतंत्र देव सिंह ने नमामि गंगे एवं ग्रामीण जला पूर्ति विभाग के अफसरों को बधाई दी। उन्होंने अफसरों की तारीफ करते हुए कहा कि जिस गति से प्रदेश में हर घर जल योजना से ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल पहुंचाया जा रहा है, वो संकेत है कि आने वाले समय में उत्तर प्रदेश, देश में सर्वाधिक नल कनेक्शन देने वाले राज्यों में नम्बर एक पर होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की महत्वाकांक्षी योजना को योगी सरकार तेजी से पूरा कराने में जुटी है। ग्रामीणों को हर घर नल पहुंचाने की मुहिम जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ रही है। विभाग के अफसरों के साथ फील्ड पर काम कर रहे अधिकारी भी योजना का लाभ जन-जन को दिलाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं। जल शक्ति मंत्री ने योजना के बेहतर क्रियान्वयन और फील्ड पर योजना को जमीन पर उतारने वाले अफसरों, इंजीनियरों की सूची तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि बहुत जल्द समारोह आयोजित कर सर्वाधिक नल कनेक्शन देने वाले जिलों में पहले स्थान प्राप्त करने वाले महोबा, दूसरे स्थान पर ललित पुर और तीसरे स्थान पर पहुंचे बागपत के अफसरों और इंजीनियरों को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड व विंध्य के अधिकतर जिलों में नल कनेक्शन प्रदान करने का लक्ष्य अंतिम पायदान के करीब पहुंच चुका है। यह पहला मौका है जब योजनाओं से वंचित बुंदेलखंड और विंध्य क्षेत्र के ग्रामीणों को नल से जल पहुंचने लगा है।

उप्र में कोविड की स्थिति नियंत्रण में मगर सतर्क रहना जरूरी: मुख्यमंत्री

लखनऊ (यूएनएस)। देश के कई राज्यों में कोविड-19 के मामलों में वृद्धि की खबरों के बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को कहा कि प्रदेश में कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति नियंत्रण में है लेकिन सभी को सतर्क रहने की जरूरत है। मुख्यमंत्री ने राज्य स्तरीय कोविड सलाहकार समिति और उच्चस्तरीय टीम-9 के साथ प्रदेश में कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति की समीक्षा की। आदित्यनाथ ने इस दौरान कहा कि पिछले कुछ समय से देश के विभिन्न राज्यों में कोविड-19 के मामलों में बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। हालांकि उत्तर प्रदेश में स्थिति नियंत्रण में है। उन्होंने कहा, यहां न केवल संक्रमण की दर कम है, बल्कि जो संक्रमित मरीज मिल रहे हैं, उनकी स्थिति भी सामान्य है।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक यह स्थिति घबराने की नहीं सतर्क और सावधान रहने की है। योगी ने कहा, ''इस वक्त उत्तर प्रदेश में कोविड के 1,791 मरीज उपचाराधीन हैं और अप्रैल माह में अब तक संक्रमण की दर 0.65: रही है। मगर पिछले अनुभवों को देखते हुए यह जरूरी होगा कि हम हर स्तर पर सतर्क रहें। सभी को सचेत रहने की सलाह देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि लखनऊ, गौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद, वाराणसी, आगरा और मेरठ जनपद में विशेष सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा कोविड-19 रोधी टीकाकरण हुआ है लिहाजा इस राज्य में बीमारी के गंभीर खतरे की आशंका कम है, इसके बावजूद सभी को कोविड प्रोटोकॉल का पालन करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने सलाह दी कि गंभीर रोग से ग्रस्त लोग और बुद्धजन भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में आने-जाने से जहां तक हो सके परहेज करें और अस्पतालों में मास्क लगाना अनिवार्य किया जाए।

कार्यकर्ता की चिंता करते थे टण्डन जी: महाना

पांच रुपये रोज पर गरीबों को दिला दिये थे आवास

लखनऊ (यूएनएस)। यूपी विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि जब 1991 में पहली बार चुनाव जीतकर राजनीति के क्षेत्र में आया तो सबसे पहले लालजी टंडन ने ही मेरे सिर पर अपना हाथ रखा और इस क्षेत्र में आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया। राजनीति के क्षेत्र में उनसे पुत्रवत वात्सल्य का भाव का हमेशा मिला।श्री महाना आज राजधानी स्थित कालीचरण डिग्री कालेज परिसर में बिहार के पूर्व राज्यपाल एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता स्वर्गीय लालजी टंडन की प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम में बोल रहे थें।श्री महाना ने कहा कि टंडन जी आज हम सब के बीच नहीं हैं पर उनकी बातें और उनकी यादें हम सब लोगों को राजनीति का रास्ता दिखाने का काम करती हैं। उनके बारे में मिनटों में नहीं बल्कि घंटों में उनसे जुड़ी स्मृतियों को बताया जा सकता है। महाना ने कहा कि पार्टी के प्रति उनका समर्पण भाव बताने की आवश्यकता नहीं है। उनका कार्यकर्ताओं से कितना प्रेम व्यवहार था यह सभी को मालूम है। कार्यकर्ताओं के हितों की हमेशा चिंता करते थें। यहीं नहीं अधिकारियों से काम कैसे कराया जाता है, यह बात वह अच्छी तरह से जानते थें।श्री महाना ने कहा कि जब वह नगर विकास मंत्री थे और उनके साथ राज्य मंत्री का दायित्व निभाने का अवसर मिला था। उस दौर में उन्होंने गरीबों के लिए पांच रुपए रोज पर आवास की एक योजना बनवाई थी। अधिकारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ था। लोगों के मन में भी इस बात की कल्पना नहीं थी। पर इस योजना को मूर्त रूप देने का काम किया।विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने उनका समाज के प्रति समर्पण कार्यकर्ताओं और संगठन के प्रति चिंता का भाव हमेशा रहता था। मुझे याद है जब कार्यकर्ता का हर जगह निराशा मिलती थी तो वह सीधे टंडन जी के पास ही आता था और वह विपरीत परिस्थितियों में सहायता और सहयोग का काम करते थें। अगर वह किन्हीं परिस्थितियों में कार्यकर्ता को डांट देते थे तो माना जाता था कि अब उस कार्यकर्ता का काम पक्का हो जाएगा।इस मौके पर केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ दिनेश शर्मा, जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह पूर्व जल शक्ति महेंद्र सिंह पूर्व मंत्री आशुतोष टंडन गोपाल समेत कई पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

राजू श्रीवास्तव की पत्नी ने मेयर की दौड़ में लखनऊ सीट से मांगा बीजेपी से टिकट

लखनऊ मेयर सीट के लिए बीजेपी में कई दावेदार

लखनऊ (यूएनएस)। उत्तर प्रदेश में नगर निकाय चुनाव का एलान होने के बाद सियासी सरगर्मी बढ़ गई हैं। दिवंगत अभिनेता और कमेडीयन राजू श्रीवास्तव की पत्नी शिखा श्रीवास्तव ने बीजेपी से लखनऊ महापौर प्रत्याशी के लिए आवेदन किया है। लखनऊ की मेयर सीट हॉट सीट मानी जाती है।1995 से इस सीट पर बीजेपी काबिज है।लखनऊ महापौर पद के लिए दिवंगत अभिनेता राजू श्रीवास्तव की पत्नी शिखा श्रीवास्तव ने आवेदन दिया है, जिसके बाद इस सीट को लेकर सरगर्मी और तेज हो गई है। बीजेपी में इस सीट के लिए उम्मीदवारों के बीच जबरदस्त मारामारी है। बीजेपी से सबसे ज्यादा उम्मीदवार सामने आ रहे हैं, ऐसे में बीजेपी शिखा श्रीवास्तव को मौका देगी या नहीं ये बड़ा आसान सवाल नहीं है।लखनऊ महापौर सीट महिलाओं के लिए आरक्षित की गई है। इस सीट से बीजेपी में सबसे ज्यादा

दावेदार सामने आए हैं म बड़े-बड़े नेताओं की नजर इस सीट पर है जिसके चलते नेता लखनऊ से दिल्ली तक के चक्कर काट रहे हैं। चाहे उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक का आवास हो या फिर उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का, हर जगह अलग-अलग जिलों से लोग टिकट के लिए आवेदन करने पहुंच रहेहैं। मौजूदा मेयर संयुक्ता भाटिया ने भी फिर से अपनी दावेदारी की है। उनका कहना है कि अगर दिनेश शर्मा को दो-दो बार मौका दिया जा सकता है तो उन्हें दूसरी बार टिकट क्यों नहीं? यूपी में नगर निकाय चुनाव दो चरणों में हो रहेहैं। लखनऊ में पहले चरण में 4 मई को वोट डाले जाएंगे। नामांकन मंगलवार से शुरू हो गए, जो 17 अप्रैल तक जारी रहेंगे। 18 अप्रैल को नामांकन पत्रों की जांच होगी और 20 अप्रैल तक नाम वापस लिए जा सकते हैं। बीजेपी पहले चरण के अपने उम्मीदवारों की घोषणा 15 अप्रैल तक कर सकती है।

बीकेटी में पटाखे की दुकान में धमाका तीन लोग गंभीर रूप से घायल

लखनऊ (यूएनएस)। बख्शी का तालाब क्षेत्र के इटौंजा थाना इलाके में पटाखे की दुकान में धमाका हो गया। बुधवार हुए धमाके में तीन लोग गम्भीर रूप से झुलस गए। जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का जायजा लिया। लोगों से घटना को लेकर जांच पड़ताल की। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इटौंजा कस्बे के महोना इलाके में बुधवार सुबह एक पटाखे की दुकान में तेज धमाका हुआ। हादसे में दुकान मालिक व दो कर्मचारी झुलस गए। सीएचसी में प्राथमिक उपचार कराने के बाद तीनों को सिविल अस्पताल रेफर किया गया। पुलिस हादसे की जांच कर रही है। दमकल की टीम भी मौके पर मौजूद है। जांच पूरी होने के बाद धमाके की वजह साफहोगी।

जनवीणा

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सुधा द्विवेदी द्वारा राज तरुण ऑफसेट, एल.जी.एफ. 4-5, अंसल सिटी सेन्टर, निकट यू. पी. प्रेस क्लब, हज़रतगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 499/1, विनय विहार कालोनी, इन्दिरा नगर, निकट-बी.आर. इंटरनेशनल स्कूल, पो. सीमैप, लखनऊ-226015 उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।

सम्पादक- सुधा द्विवेदी
कार्यकारी सम्पादक
डॉ. एस.के.गोपाल
प्रबंध सम्पादक
होमेन्द्र कुमार मिश्र
विशेष संवाददाता
सुनील कुमार सिंह
संवाददाता
जादूगर सुरेश कुमार
सम्पर्क : 9451532641, 8765919255
ईमेल :janveenanews@gmail.com
RNI No. UPHIN/2011/43668
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।